P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

SEVA-DHAM HOSPITAL
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

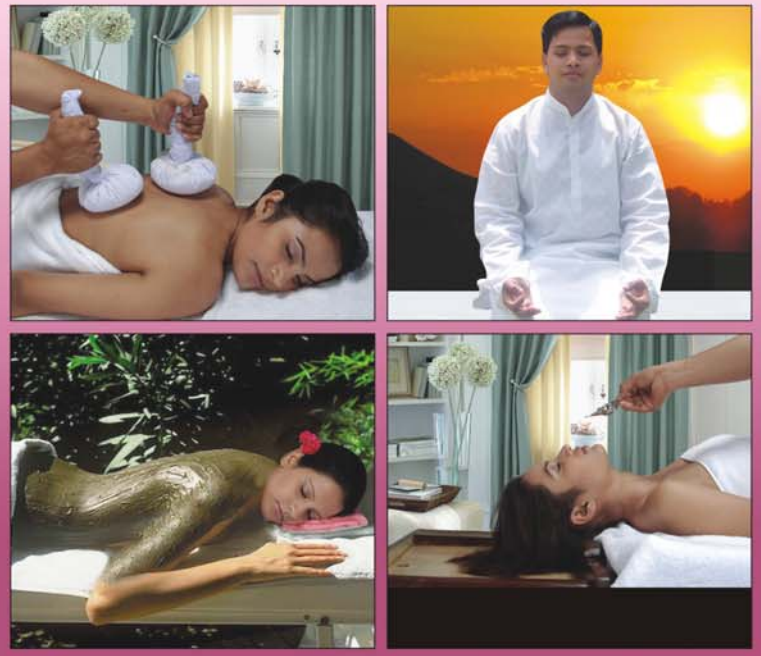

SEVA-DHAM HOSPITAL
K. H.-57, Ring Road, Behind Indian Oil Petrol Pump, Sarai Kale Khan,
New Delhi-110013. Ph. : +91-11-26320000, 26327911 Fax : +91-1126821348
Mobile 9999609878, 9811346904, Website : www.sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1
से मुद्रित।
संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
दिसम्बर, 2011

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

प्रस्तर गजराज के साथ पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी
त्रिवेन्द्रम एअरपोर्ट पर।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 12 दिसम्बर, 2011

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.info
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष वाणी - 5
02. बोध कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 17
06. स्वास्थ्य - 25
07. बोलें-तारे - 26
08. समाचार दर्शन - 28

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब

आर्ष वाणी

अमंत्र मक्षरं नास्ति, नास्ति मूल मनौषधं,
अयोग्यः पुरूषो नास्ति योजक स्तत्र दुर्लभः।

कोई भी ऐसा अक्षर नहीं है जिसका मंत्रन बने। कोई भी पेड़ पौधा नहीं है जिसकी औषधि न बने। दुनियां में एक भी ऐसा पुरूष नहीं है जिसमें किसी तरह की योग्यता नहीं हो। इन सबकी संयोजना करने वाला दुर्लभ होता है।

बोध-कथा

साहस का इलाम

एक राजा का प्रधानमंत्री ईमानदार, साहसी और निष्ठावान था। वह बूढ़ा हो गया था और उसके बचने की उम्मीद नहीं रह गई थी। राजा को चिंता हुई कि उसके बाद राज्य की देखभाल कौन करेगा। दूसरे मंत्री उतने योग्य नहीं थे। उन्हीं दिनों राजा का एक प्रिय घोड़ा भी बीमार था। तरह-तरह के इलाज के बाद भी वह ठीक नहीं हो रहा था। राजा ने आदेश जारी कर दिया कि जो मंत्री घोड़े के ठीक होने का समाचार लेकर आएगा, उसी को प्रधानमंत्री बनाया जाएगा। परंतु जो उसकी मौत की खबर लेकर आएगा उसे फांसी दी जाएगी। इस आदेश से सभी मंत्री मुसीबत में फंस गए। सभी जानते थे कि घोड़ा ठीक नहीं होगा। लेकिन राजा के पास जाकर हर मंत्री यही कहता, 'महाराज, वह ठीक हो रहा है।' एक दिन घोड़ा मर गया। राजा को यह खबर कौन दे, इसको लेकर मंत्रियों में झगड़ा शुरू हो गया। झगड़ा बढ़ता देख उस्तबल का एक नौकर आया। उसने कहा कि वह यह खबर देगा। एक मंत्री ने कहा, 'तुम जानते हो, घोड़े की मृत्यु की खबर देने वाले को मौत की सजा मिलेगी।' उसने कहा, 'आप की जान के सामने हमारी जान की कीमत ही क्या है।' नौकर राजा के पास जाकर बोला, 'राजन् मैं मंत्रियों की तरफ से आया हूं।' राजा ने पूछा, 'घोड़े की हालत कैसी है?' नौकर ने कहा 'अब उसे कोई दुख-दर्द नहीं है। ऐसी गहरी नींद में सोया है कि हिलता-डुलता तक नहीं।' राजा ने पूछा, 'क्या वह मर गया?' नौकर ने कहा, 'हां राजन्।' राजा ने कहा, 'तुम जानते हो न घोड़े की मौत की खबर सुनाने वाले को मौत की सजा मिलेगी।' इस पर नौकर ने जवाब दिया, 'मेरा सिर हाजिर है। आखिर घोड़े की लीद उठाने वाले की कीमत ही क्या है।' राजा ने कहा, 'तुम निर्भीक, ईमानदार और निष्ठावान हो। हमें तुम्हारे जैसे व्यक्ति की तलाश थी।' राजा ने उसे प्रधानमंत्री बना दिया।

शाश्वत स्वर

भारत का इतिहास पढ़ने जैसा है

हर समय और हर देश की इतिहास पढ़ने लायक होता है। इतिहास पढ़ने से पूर्वापर का ज्ञान ही नहीं होता, पूर्वापर सभ्यता और संस्कृति से अनेक तरह की प्रेरणा मिलती है।

जो आदि युग के ज्ञाता हैं वे जानते भी हैं कि प्राणी मात्र सुरक्षा का कर्ता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव, पृथ्वी, पानी, हवा, अग्नि ये ही नहीं इनसे भी सूक्ष्म जीवों का जैन शास्त्रों में विवेचन आता है। वे सभी अपनी-अपनी क्षमता अनुसार अपनी-अपनी सुरक्षा के साधन जुटाते हैं। इनसे और भी सूक्ष्म प्राणी स्थावर प्राणी उनको भी हलन, चलन की क्रियाओं को महाज्ञानी साक्षात् ज्ञान लेते हैं। स्थूल प्राणी तो अपने-अपने बचाव की भागदौड़ करते हम भी देखते ही हैं।

सबसे प्राचीनतम युद्ध की पद्धति ऋषभ भगवान के समय में शुरू हुई। नाभि कुलकर के समय हाकार, माकार, धिक्कार आपसी लड़ाई के भी मौखिक प्रकार थे। और दंड भी दिए जाते थे। फिर ऋषभदेव भगवान के समय में बहुत तरह के युद्ध और दंड प्रचलित हुए। ऋषभदेव भगवान के खुद बेटे भी भरत और युद्ध बाहुबलि उनमें दृष्टि युद्ध, मुष्टि युद्ध और वाक्युद्ध ये युद्ध भरत बाहुबलि के बीच में हुए थे। इसके बाद सभी तीर्थकरों के आरे में कोई न कोई युद्ध विधि बढ़ती गई।

भगवान महावीर को शस्त्र विद्या सिखाई जा रही थी। जो तीर आम के पेड़ पर चलाने के लिए कहा, उन्होंने तीर अपनी छाती में लगा लिए। गुरू के पूछने पर बताया कि मैं देख रहा हूं जो तीर आम के पेड़ पर लगाता हूं वह अगर खुद के लगे तो कितना दर्द होता है।

पहले अपनी सुरक्षा के साधन थे अपने ही अंग प्रत्यंग। बाद में पत्थरों के माध्यम से यानी पत्थरों के शस्त्रों से अपना बचाव करते थे। इसके बाद हड्डियों और दान्तों को सुरक्षा के लिए प्राणियों ने काम में लेना शुरू किया। जब हड्डियों से काम चलना दुस्साध्य हो गया तो तीर के बहुत सारे प्रकार काम में आने शुरू हो गए। अब तीरों का जमाना भी नहीं रहा। यद्यपि उस जमाने का अनुसरण करते दशहरे पर श्रीमती सोनिया गांधी ने तीर कमान का दृश्य दिखाया था। लेकिन अब तो अणुबम, एटमबम, मानव बम पता नहीं कितनी प्रकार के साधन चले हैं। पता नहीं किसी को नष्ट करने में किसी का क्या भला है। आज गिने-चुने लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपनी शक्ति का दूसरों की भलाई के लिए प्रयोग किया है।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

गुरुदेव की कलम से

एक चिनगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तो!

शिष्य ने आचार्य से निवेदन किया-गुरूदेव, मुझे प्रभु-प्राप्ति का आसान रास्ता बताने की कृपा करें। तप मेरे से होता नहीं। तपस्वी व्यक्ति तो एक-एक माह का तप कर लेते हैं। मेरे से एक माह क्या, एक दिन भी भूखा नहीं रहा जाता। एक पहर भी बडी मुश्किल से भूखा रह पाता हूं। इसलिए तपस्या तो मेरे लिए एक सपना-सा है।

शास्त्र-ज्ञान में मैं अत्यन्त मन्द हूं। यह दिमाग इतना मोटा है कि शास्त्र की झीनी-झीनी बातें भीतर जाती ही नहीं। फिर पढ़ा-लिखा भी नहीं हूं मैं। सत्संग के लिए समय नहीं मिलता। दिन-भर रोटी-रोजी के चक्कर में ही लगा रहता हूं। जब सत्संग होता है, मुझे वहां जाने की सुविधा नहीं मिल पाती। कभी समय निकालकर चला भी जाऊं तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता।

दान देने का मेरे में सामर्थ्य नहीं है। जब घर का खर्चा भी बड़ी मुश्किल से निकलता है, तो किसी भी पुण्य-कार्य में दान देने का प्रश्न ही कहां उठता है। इस तंग हालत में सेवा-परोपकार की बात सोच ही नहीं सकता।

सत्य और शील का आचरण तो बड़े-बड़े योगियों के लिए भी दुष्कर है। फिर मेरे जैसे साधारण प्राणी के लिए तो इसकी कल्पना करना भी कठिन है। इस प्रकार तप के लिए मेरे पास तन की शक्ति नहीं है, दान और सेवा-परोपकार के लिए धन की शक्ति नहीं है और सत्य-शील के लिए मन की शक्ति नहीं है। इस स्थिति में मेरे जैसे व्यक्ति के लिए प्रभु-प्राप्ति का क्या कोई रास्ता है?

गुरूदेव ने फरमाया-निराश होने की बिलकुल जरूरत नहीं है तुम्हें, वत्स! आत्म ज्ञान या प्रभु-प्राप्ति के मार्ग अनगिन हैं। वे मार्ग सरल से सरल भी हैं और कठिन से कठिन भी। सच्चाई यह है मार्ग अपने में न कोई आसान होता है और न कोई मुश्किल। मार्ग तो मार्ग होता है। वह किसी के लिए सरल होता है तो किसी के लिए कठिन। यह चलने वाले की शक्ति पर निर्भर करता है। जिसके पास शक्ति-सामर्थ्य खूब है, उसके लिए रास्ता भी आसान बन जाता है। जो तन से और मन से कमजोर होता है, उसके लिए सरल रास्ता भी मुश्किल बन जाता है। मार्ग सरल या कठिन वैसा ही है, जैसी चलने वाले की शक्ति

है। इसलिए तुम राह की चिंता मत करो। यदि एक राह तुम्हारे लिए आसान नहीं है, कोई-न-कोई दूसरी राह मिल- जाएगी। कमी चाह की होती है, राह की नहीं।

नाम-सुमिरन-एक आसान मार्ग

तप के लिए तुम्हारे पास तन की शक्ति नहीं है, दान, सेवा-परोपकार के लिए धन की शक्ति नहीं है, सत्य और शील के लिए मन की शक्ति नहीं है। किन्तु तुम्हारे पास भजन की शक्ति तो है। और कुछ नहीं तो तुम भगवान का नाम तो ले सकते हो। इसमें न भूखा रहना पड़ता है, न धन खर्च करना पड़ता है और न ही दिमाग पर जोर देना पड़ता है। एकदम आसान मार्ग है नाम का सुमिरन। और प्रभावशाली इतना कि इसके सामने दूसरे साधन फीके पड़ जाएं। शास्त्रों में यहां तक कहा गया-

एक्कोवि णमुकारो जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स
संसार-सायराओ, तारेइ नरं व नारिं वा।

जिनवर-श्रेष्ठ भगवान महावीर को एक बार भी किया गया नमस्कार नर-नारियों को संसार-सागर के पार पहुंचा देता है। कितनी बड़ी महिमा गाई गई है नाम सुमिरन की। कि एक बार भी किया गया नमस्कार, भगवान का एक बार भी लिया गया नाम, प्राणियों को संसार-सागर से पार लगा देता है। इस शास्त्र-वाणी पर शायद तुम्हें विश्वास नहीं हो रहा होगा। तुम सोच रहे होंगे कि एक बार क्या, एक-सौ आठ बार, एक माला, भगवान के नाम की तो तुम रोज फेरते हो। वर्षों हो गये माला फेरते-फेरते। और सागर तो क्या अभी एक छोटी-सी नदी का पार भी नहीं आ पाया है। यह भी लगता होगा तुम्हें कि भगवान महावीर का यह स्तुति-गान अतिशयोक्तिपूर्ण है, बढ-चढ़कर किया गया है। यों किसी का एक बार नाम लेने से कल्याण हो जाय, फिर तो सारी दुनियां का ही बेड़ा पार हो जाए। जबकि ऐसा हो कहीं नहीं रहा है।

पर यहां यह समझने जैसा है कि यह उद्घोषणा केवल जैन-शास्त्रों की ही नहीं है, रामचरित्रमानस में गोस्वामी जी भी यही कहते हैं-

जासु नाम सुमिरत इक बारा,
उतरहि भव जल सिन्धु अपारा।

हम देखेंगे, उस श्लोक में और इस चौपाई पद में केवल भाषा का अन्तर है। दोनों में भाव पूरी तरह एक हैं। गोस्वामी जी भी कहते हैं, ऐसा है श्रीराम का नाम, जिसका एक बार भी सुमिरन कर लिया जाये, तो यह व्यक्ति इस अपार भव-सागर से पार उतर जाता है। केवल जैन-शास्त्र या रामचरितमानस ही नहीं, सभी धर्म-ग्रन्थों एवं सभी महान् संत-पुरूषों का कहना है कि भगवान का एक बार भी लिया गया नाम दुःखों से मुक्ति दिला

देता है। यह अवश्य है, हमारा अनुभव इस घोषणा से मेल नहीं खाता। दोनों में भारी अन्तर्विरोध है। इस अन्तर्विरोध को समझना बहुत जरूरी है।

नाम है एक चिनगारी

प्राचीन सन्तों के समक्ष भी यह शंका उठाई गई थी, कि एक बार के भगवान-नाम से समस्त पापों से छुटकारा कैसे सम्भव है। इसका उत्तर देते हुए गोस्वामी जी कहते हैं-

राम नाम हिरदे पर्‌यो, भयो पाप को नास,
ज्यों चिनगारी आग की, पड़ी पुराणै घास।

राम का नाम हृदय में धारण करते ही पाप का नाश वैसे ही हो जाता है, जैसे ढेर सारे पुराने घास को आग की एक चिनगारी जला डालती है। चिनगारी तो आग का एक अत्यंत छोटा-सा हिस्सा है यों कह सकते हैं न-के-बराबर हिस्सा है। उधर पुराने घास का बहुत बड़ा ढेर है। गोस्वामी जी का कहना है इतने बड़े घास के ढेर में एक छोटी-सी आग की चिनगारी पड़ जाये, उसके बाद उस घास के ढेर का पता तक नहीं चलता, वह जल-जलकर राख बन जाता है, वैसा ही है भगवान का नाम, जो हृदय में पड़ते ही, चाहे कितने ही जन्म-जन्मों के पाप क्यों न हों, उन पापों का नाश हो जाता है।

आश्चर्य है जैन आचार्य श्रीमद् देवचन्द्रजी भी इस प्रश्न का यही उत्तर देते हुए चौबीसी-स्तवन में लिखते हैं-

पाप-पराल को पुंज बण्यो अति, मानो मेरू आकारो
ते तुम्फ नाम हुताशन सेती, सहज ही प्रजलत सारो
पदम प्रभु पावन नाम तिहारो।

पाप-पराल-पुंज चाहे मेरू पर्वत जितना भी क्यों न हो, किन्तु आपके नाम रूपी अग्नि से वह सहज ही जलकर भस्म हो जाता है, पद्म प्रभु, ऐसा है आपका पावन नाम।

यदि आग की चिनगारी की तरह भगवान के नाम को हृदय में धारण किया जाये, तो पराल-घास की तरह पाप भीतर टिक ही नहीं सकता। चाहे वह पाप कितने ही जन्मों का क्यों न हो। चाहे अन्धेरा सैकड़ों वर्षों से किसी बन्द कमरे में इकट्ठा क्यों न रहा हो, एक दीपक जला देने के बाद वह नहीं ठहर सकता। क्या ऐसा कभी होता है कि एक दिन का अन्धेरा दूर करने के लिए एक दीपक चाहिए, और सौ वर्षों के अन्धेरे को दूर करने के लिए सौ वर्षों तक सौ-सौ दीपक जलाने पड़े? अन्धेरा चाहे एक दिन का है या एक वर्ष का, सौ वर्ष का है या हजार बर्ष का दीपक जला कि अन्धेरा मिटा। यही स्थिति है भगवान के नाम की। किन्तु वह नाम चिनगारी की तरह लिया जाना चाहिए। बुझे हुए कोयले की तरह लिये गये नाम से अन्धेरा दूर नहीं होने वाला है।

परम्परा हमें माटी का दीया दे सकती है, तेल दे सकती है, बाती दे सकती है, किन्तु जलना हर दीपक को खुद पड़ता है। और जिस दीपक के जलने की तैयारी होती है, वह प्रकाश दे सकता है, वही अन्धेरा दूर भगा सकता है। गुरू हमें नाम या मन्त्र दे सकता है, जप की विधि दे सकता है, किन्तु उस मन्त्र को चिनगारी की तरह धारण करना हमारी जिम्मेदारी है उस मन्त्र-दीप को हृदय-दीवट पर प्रतिष्ठित करना हमारा काम है। यशस्वी कवि-शायर श्री दुष्यन्त कुमार के शब्दों में-

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सहीं, लहरों से टकराती तो है
एक चिनगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तो
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है

हमारे पास ऋषि-मुनियों की तप परम्परा तो है, उस तप में से निकली हुई मंत्र-परंपरा भी है। सब कुछ है, किन्तु चिनगारी अपने भीतर ही पैदा करनी होगी, जिस दिन वह चिनगारी पैदा हो गई, संत-वाणी में और हमारे अनुभव में कोई अन्तर्विरोध नहीं रह जाएगा। हमारा भी वही अनुभव होगा, जो संतो ने अपनी वाणी में कहा है।

तन, वचन और मन को साधना जरूरी

जप-सुमिरन के समय नाम और मंत्र के चिनगारी न बनने में सबसे बड़ी बाधा हमारा अपना मन ही होता है। हम बैठते हैं जप करने के लिए, ऊपर होंठों पर जप चलता है और भीतर मन कहीं-का-कहीं चक्कर लगाता रहता है। जब तक मन, वाणी और काया तीनों नाम या मंत्र के साथ एकाकार नहीं होगें, चिनगारी पैदा नहीं हो सकती। हमारी लगभग स्थिति यह है कि तन कहीं और है और मन कहीं और है। तब जप बुझे हुए दीपक के समान ही रह जाता है।

जप के लिए जरूरी है यह तन भी सधे, वचन भी सधे और मन भी सधे। तन को साधने के लिए आसन-सिद्धि जरूरी है। आसन सिद्ध नहीं होगा तो जप के समय हम स्थिरतापूर्वक नहीं बैठ सकेंगे। शरीर में कभी कहीं दर्द महसूस होगा तो कभी कहीं। कभी शरीर में अकड़न महसूस होने लगेगी। जब शरीर ही जप में साथ नहीं देता। तो मन की तो बात ही क्या है। जप में शरीर साथ दे, इसके लिये आसन सिद्धि होना जरूरी है।

वाणी का सहयोग तब मिलेगा, जब जप के साथ मौन जुड़ेगा। वैसे तो मौन शब्द बहुत गहरा है। जब इन्द्रियां बाहर से बिलकुल विरत हो जाएं, वह पूर्ण मौन कहलाता है। किन्तु यहां मौन से तात्पर्य न बोलने से है, इन्द्रियों का पूर्ण मौन तो कठिन होता है, किन्तु वाणी का मौन भी आसान नहीं होता। थोड़ी-सी देर में ही हम बोलने के लिए आकुल-व्याकुल

होने लगते हैं। चार भगत मंदिर में जप करने के लिए बैठे। जप-अनुष्ठान के बीच में बोलना बिल्कुल वर्जित होता है। थोड़ी ही देर बाद, न बोलने के कारण चारों को ही ऊब महसूस होने लगी। पर बोलने के लिये कोई बहाना तो चाहिए। इतने में एक को बहाना मिल गया। वह बोल उठा-अपने तो जप-अनुष्ठान में बैठे गये, मंदिर का दरवाजा तो खुला ही रह गया। यह सुनते ही दूसरे को भी बोलने का मौका मिल गया। वह भी बोल उठा-अरे, अपने मौन का संकल्प था अनुष्ठान पूरा होने तक। तू बीच में ही बोल गया। अब तीसरा भगत भी कब चूकने वाला था। उसने कहा-यह बोल गया सो बोल गया। पर तू भी मौन कहां रहा? चौथे ने सोचा-तीनों ने बोलकर अपनी ऊब मिटा ली है। केवल मैं बचा हूं। ऊब मुझे भी मिटाना है। वह बोल पड़ा-मैं ही भला जिसने अपने संकल्प को नहीं तोड़ा। और वह भी बोल गया। इस प्रकार आसान नहीं है वाणी का मौन भी रखना। पूर्ण मौन तो बहुत साधना के बाद ही प्राप्त होता है।

सबसे बड़ी समस्या है यह मन

तन को साधने के लिये आसन-सिद्धि तथा वचन को साधने के लिये मौन का अभ्यास, ये दोनों भी इतने आसान नहीं हैं। फिर मन को साध लेना तो महान कठिन है। फिर आसन और मौन दोनों ही अभ्यास स्थूल हैं। ये आसानी से पकड़ में भी आ जाते हैं तथा थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर इसका अभ्यास सध जाता है। किन्तु मन का मामला बड़ा टेढ़ा है। इसको साधना बहुत कठिन है। साधारण गृहस्थ की तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े संत-महात्मा भी इस मन के सामने हार जाते हैं। पचास-पचास वर्षों से नियमित जप-पाठ करने वालों का भी यह सवाल होता है कि जप पाठ में मन नहीं टिकता। सब कुछ ऊपर-ऊपर चल रहा है। जैनी हैं तो नवकार मन्त्र की माला फेरनी ही चाहिए। सनातनी हैं तो श्रीराम का नाम लेना चाहिए। सिख हैं तो वाहे गुरू का सुमिरन करना चाहिए। मुसलमान हैं तो नमाज पढ़ना चाहिए। बस इसी संस्कार के कारण लोग जप-पाठ कर लेते हैं, किन्तु यह मन है कि न नवकार मंत्र में टिकता है, न राम के नाम में, न वाहे गुरू के सुमिरन में लगता है, न नमाज पढ़ने में जो कुछ चलता है, उसमें दिखावा ही ज्यादा होता है, असलियत कम होती है।

शहर के काजी जी तथा नवाब साहिब मस्जिद में नमाज अदा करने जा रहे थे। रास्ते में गुरू नानकदेव मिल गये। नानकदेव का प्रमुख सन्देश था अल्लाह हो या राम, एक ही ज्योति के ये अलग-अलग नाम हैं। कट्टर-पंथी लोग उनके इस उपदेश से मन-ही-मन जलते थे। मौका मिलने पर गुरू नानकदेव को देखकर काजी जी बोले-तुम्हारे लिए तो अल्लाह और राम एक ही है। आओ, हमारे साथ फिर मस्जिद में नमाज अदा करने के लिए चलो। अगर नमाज के लिए तुम मस्जिद में चलते हो तब तो हम मानेंगे, तुम्हारी

कथनी-करनी एक है, तुम सच्चे हो । अगर नहीं चलते हो तो तुम्हारा उपदेश ढोंग है, पाखंड है, दिखावा है।

गुरू नानकदेव मन-ही-मन मुस्करा उठे। बोले-चलो, हमें आपके साथ चलने में क्या हर्ज है। तीनों मस्जिद में पहुंचे। काजी जी तथा नवाब साहिब नमाज में बैठ गए। नानकदेव भी ध्यान में लीन हो गए। नमाज पूरी होने पर काजीजी और नवाब साहिब ने देखा, नानकदेव तो यों ही आंखें मूंदे बैठे हैं। वे बहुत नाराज हुए। बोले मस्जिद में आकर भी नमाज न पढ़ना, यह इस्लाम धर्म का अपमान है। गुरू नानकदेव ने कहा-मैं आपके साथ आया था नमाज पढ़ने के लिए। किन्तु आप यहां थे नहीं, फिर मैं किसके साथ नमाज पढ़ता? काजीजी और नबाब साहिब दोनों एक साथ बोल पड़े-इतना बड़ा झूठ बोल रहे हो तुम। हम तो यहीं थे और तुम्हारे सामने ही नमाज अदा कर रहे थे।

नानकदेव बोले-काजीजी, सच-सच बताना, आप नमाज में थे या अपने बाड़े में, जहां आज सबेरे ही एक घोड़ी ने बछिया को जन्म दिया। क्या आपको यही चिन्ता नहीं सता रही थी कि बाड़े का दरवाजा भूल से खुला रह गया है। कहीं कोई कुत्ता आदि जानवर बछिया का नुकसान न कर दे। यह सुनते ही काजीजी का चेहरा सफेद पड़ गया। नानकदेव ने मन के चोर को पकड़ लिया था। वे नानकदेव के कथन का प्रतिवाद न कर सके।

अब संतजी ने नवाब की ओर देखा। फिर बोले-नबाब साहिब, आप बताएं, आप नमाज में थे या अरब से आए घोड़ों के बारे में सौदागरों के साथ तोल-मोल में लगे थे। यह सुनते ही नवाब साहिब तो संतजी के चरणों में ही आ गिरे। गुरू नानकदेव ने कहा-अब आप ही बताए, आप नमाज में कहां थे। फिर मैं किसके साथ नमाज पढ़ता?

यह है लगभग हम सबकी मनःस्थिति! न हमारा तन सधा हुआ है, न वचन सधा हुआ है और न ही सधा हुआ है मन! फिर नाम या मंत्र चिनगारी बने तो कैसे बने। जप सुमिरन में तन का दीपक हो, वचन का तेल हो, मन की बाती हो, उसको जलाएं नाम की तिल्ली से, फिर देखिए, रोशनी प्रकट होती है या नहीं होती है। अंधेरा दूर होता है या नहीं होता है। इन तीनों में से एक की भी कमी होने पर नाम चिनगारी का रूप धारण नहीं कर सकता, दीपक में से रोशनी प्रकट नहीं हो सकती। जप-सुमिरन के बावजूद यदि भीतर अंधेरा वैसा-का-वैसा है, तो हमें समझ लेना है, हमारी कहीं मूल में ही भूल हो रही है।

नाम का मन पर प्रभाव

हमारा मन मननशील है। वह निरन्तर चिंतन-मनन करता ही रहता है। इस मनन से ही मन का अस्तित्व है- मननात् मनः। मनन है तो मन है। मनन नहीं तो मन भी नहीं। और सारा मनन-चिंतन शब्दात्मक होता है। हम शब्द के अभाव मे चिन्तन नहीं कर सकते।

शब्द और चिन्तन का अभिन्न सम्बन्ध होता है। चिन्तन विषयात्मक होता है। इस प्रकार मन और विषय के बीच शब्द के माध्यम से एक सम्बन्ध बन जाता है। मन को निर्विषय बनाने के लिए जरूरी है कि वह शब्द-जगत से ऊपर उठे। अब प्रश्न यह है कि यह मन नाम और रूप से ऊपर उठे तो कैसे?

इस नाम-रूपमय जगत से ऊपर उठने के लिए प्रारम्भ में हमें नाम और रूप का ही सहारा लेना होगा। हीरा, केवल हीरे से ही काटा जाता सकता है। विष का औषध विष ही होता है। वहां अमृत काम नहीं करता। ऐसा भी कहा जा सकता है कि वहां विष ही अमृत बन जाता है। ऐसे ही मन को अनाम तक ले जाने के लिए पहले नाम का ही आलम्बन लेना पड़ता है। प्रारम्भ में और-और सभी नामों से मन को हटाकर उसे एक नाम के साथ जोड़ें। फिर उस नाम से भी मन को हटाकर अनाम में छलांग लगाएं। नाम-सुमिरन वह खिड़की है जिसके द्वारा अनाम के आकाश में छलांग लगाई जा सकती है।

नाम शब्दात्मक होता है। शब्द अक्षरात्मक होता है। अक्षर वह है जिसका कभी क्षरण नहीं होता। अक्षर का संबंध ध्वनि से होता है। ध्वनि का प्रभाव हमारे तन, मन और चेतन तक जाता है। अन्तर्जगत पर ध्वनि का और गहरा प्रभाव होता है। अक्षर ध्वनि पर सवार होकर ही अपनी यात्रा तय करता है। नाम और मंत्र का कार्य-क्षेत्र प्रमुखतः ध्वनि जगत ही है। उस ध्वनि के सहारे ही अनहद तक पहुंचा जा सकता है। उस ध्वनि-जगत तक पहुंचने का माध्यम अक्षर है, इसलिए हर अक्षर अपने में मन्त्र होता है।

अमन्त्र मक्षरं नास्ति, नास्ति मूल मनौषधम्।
अयोग्यः पुरूषो नास्ति, योजक स्तत्र दुर्लभः।।

ऐसा कोई अक्षर नहीं जो अपने में मन्त्र न हो। ऐसी कोई जड़ी नहीं जो अपने में औषध न हो। ऐसा कोई पुरूष नहीं जो अपने में योग्य न हो। इतना अवश्य है इनकी उचित संयोजना करने वाला दुर्लभ होता है। अक्षरों की उचित संयोजना से ही वह मंत्र बन पाता है। जड़ी-बूटियों की उचित संयोजना से ही ये औषध बन पाती है। पुरूष की योग्यता के अनुरूप संयोजना से ही वह महान् कार्य सम्पादित कर पाता है। महत्वपूर्ण है इनकी सही संयोजना। दुर्लभ है इनका सही संयोजक।

शब्दों की सही संयोजना से अर्थपूर्ण भाषा बनती है। अक्षरों की सही संयोजना से अर्थपूर्ण शब्द बनता है। ध्वनियों की सही संयोजना से अर्थपूर्ण अक्षर बनता है। और उचित-संयोजना-पूर्ण अक्षर ही मन्त्र बनते हैं। मन्त्र में अक्षरों की संयोजना अपने उद्देश्यों के अनुसार होती है। अगर संयोजना गलत हो तो उसके परिणाम भी विपरीत ही आएंगे। या यों कहा जा सकता है, जिस मंत्र में अक्षरों की जैसी संयोजना है, हमारे पर उसका प्रभाव भी वैसा ही होने वाला है।

एक कालेज में मेरा प्रवचन था। कालेज का माहौल अपने ढंग का होता ही है। फिर कोई संन्त-महात्मा कालेज में आ जाए तो कहना ही क्या? एक छात्र मेरे पास आया और बोला-आपने किस कालेज में अपना अध्ययन किया। मैंने सहजता से कहा- किसी भी कालेज में नहीं। उसने उपहास करते हुए कहा-फिर कैसा आपका ज्ञान? नो नालेज विदआउट कालेज-कालेज के बिना कोई ज्ञान नहीं होता। मैंने भी हंसते हुए कहा-इसीलिए तो आज आपके बीच कालेज का अनुभव लेने आए हैं। वह थोड़ा सकपका गया।

छात्रों के बीच प्रवचन हुआ। प्रसंगवश मन्त्र-विज्ञान के बारे में बताते हुए मैंने कहा-हर अक्षर अपने में मंत्र होता है। प्रवचन के अन्त में प्रश्न के लिए एक छात्र ने हाथ ऊंचा किया प्रिंसिपल साहिब सवाल को टालना चाहते थे। उनको संकोच या भय इस बात का था कि कोई छात्र सन्त-पुरूषों का अपमान न कर दे। लेकिन मेरी सहमति से उन्होंने उस छात्र को प्रश्न पूछने की अनुमति दे दी।

वह छात्र खड़ा हुआ। अनुशासन के वातावरण की कल्पना आज के कालेज-जीवन में आकाश-कुसुम है। उसके चेहरे पर उपहास-परिहास के भाव सहज ही पढ़े जा सकते थे। उसने कहा-आपने अभी कहा-हर अक्षर अपने में मन्त्र है। फिर हम 'जी ओ डी' (GOD) का ही जाप क्यों करें? हम 'डी ओ जी' (DOG) का भी जाप कर सकते हैं। दोनों में अक्षर भी वही हैं। केवल अक्षरों का क्रम आगे-पीछे है। फिर किसी का भी जप किया जाए, इसमें क्या आपत्ति हो सकती है? प्रश्न सुनते ही सारे छात्र खिलखिला कर हंस पड़े।

मैं देख रहा था प्रश्न के पीछे कोई जिज्ञासा का भाव नहीं है। तर्क जिज्ञासा शान्त करने के लिए हो तो उचित है। किन्तु जब तर्क केवल तर्क के लिए हो तब वह निरर्थक ही होता है। वहां भी केवल तर्क के लिए तर्क था। फिर भी उत्तर देना ही था। मैंने अत्यन्त सहजता से कहा-बहुत अच्छा प्रश्न है आपका, कि जब हर अक्षर अपने में मन्त्र है, तब 'गॉड' (GOD) की जगह 'डॉग' (DOG) का जप आप करें, तो आपत्ति नहीं है मुझे, आप आराम से यह जप-पाठ कर सकते हैं। पर इसना अवश्य समझ लें मन्त्र-विज्ञान का एक नियम यह भी है, जो जिसका जप करता है, वह वैसा ही हो जाता है। अब 'डॉग' बनना है या 'गॉड' इसका निर्णय आपको करना है। आप जो भी बनें, उसमें मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। यह सुनते ही सारी सभा में एक जोर का ठहाका गूंज उठा। सारे छात्र तथा प्राध्यापक उस छात्र की ओर देखने लगे। उस समय उस छात्र का चेहरा देखते ही बनता था।

जैसे हमारे विचार होते हैं, हमारा व्यक्तित्व भी वैसा हो जाता है। यह एक शाश्वत नियम है। बाइबिल कहती है As we thinketh, so we becometh- हम जैसा सोचते हैं, वैसे ही हो जाते हैं। जब हम राम नाम का जप करते हैं, तब हमारे भीतर एक

चित्र उभरता है-मर्यादा पुरूषोत्तम राम, आसुरी ताकतों के खिलाफ जूझता हुआ राम। और हमारे भीतर भी मर्यादाओं के प्रति एक प्रेरणा जागती है, अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध जूझने की एक ललक पैदा होती है। जब हम महावीर का ध्यान करते हैं, हमारे भीतर एक तस्वीर उभरती है-त्याग और तपस्या की मूर्ति भगवान महावीर, हिंसा, जातिवाद, दास-प्रथा और अंध विश्वासों के खिलाफ जेहाद छेड़ते महावीर। और हमारे भीतर भी सहजतया त्याग, तपस्या और अहिंसा-दया की भावनाएं जागती हैं। जीवन के निर्माण में इन भावनाओं और प्रेरणाओं का प्रमुख स्थान होता ही है।

मन्त्रों का विघ्न-विनाशी स्वरूप

अनेक बार प्रश्न सामने आता है क्या मन्त्र-जाप से विघ्न-बाधाओं का नाश होता है? नवकार महामन्त्र के स्तुति-गान में कहा गया है-

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व-पाव-पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

पंच-परमेष्ठी को किया गया नमन सब पापों का नाश करने वाला है तथा समस्त मंगलों में यह सर्वोत्तम मंगल है। शास्त्रों की यह घोषणा इस प्रश्न का उत्तर ही है। बात बहुत सरल ही है। जब हम घर में दीपक जलाएंगे, तो अंधेरा दूर होगा ही। पवित्र नाम का सुमिरन करेंगे तो पाप का नाश होगा ही। मंगल की स्थापना करेंगे तो अमंगल के टिकने का प्रश्न ही नहीं है।

साधारणतया आदमी बाहर की विघ्न-बाधाएं देखता है। जबकि असली विघ्न-बाधाएं तो भीतर हैं। अगर भीतर में अपने पूर्व-कृत कर्मों की कोई बाधा न हो तो बाहरी विघ्न-बाधाएं टिक ही नहीं सकती। इसलिए समझना है विघ्न के मूल कारण भीतर हैं बाहर नहीं। हम उन कारणों को बाहर देखते हैं। जो कारण बाहर दिखते हैं। उनको हटाने की कोशिश करते हैं। उस हटाने की कोशिश में कई बार इतने गलत कार्य कर बैठते हैं कि विघ्न-बाधाएं घटने की बजाए और अधिक बढ़ जाती हैं। इसलिए सन्त-पुरूष कहते हैं। उन विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिए तुम भीतर की ओर ध्यान दो। पूर्व-कर्म-कृत पाप दूर होने पर पुण्य अपने आप प्रकट हो जाएगा।

नाम-सुमिरन या मन्त्र-जाप भीतरी बाधाओं को दूर हटाता है। वह चेतन पर आए मैल को मांजता है। जैसे तन पर जमा हुआ मैल साबुन से छूटता है, वैसे ही चेतन पर जमा हुआ कर्म-मल नाम और मन्त्र से धुल जाता है। गोस्वामी जी कहते हैं राम का नाम ऐसा मणि-दीप है, जिसको जीभ की देहरों पर रखने से बाहर-भीतर दोनों ओर उजाला हो जाएगा-

राम-नाम मणि-दीप धरू, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरी, जो चाहत उजियार।।

कमरे में रखा दीपक केवल कमरे को उजाला देता है। किन्तु जिस दीपक को देहरी पर रख दिया जाए, वह कमरे के भीतर तथा आंगन, दोनों को प्रकाश से भर देता है। ठीक इसी तरह यह जीभ देहरी है। देहरी की तरह इस जीभ का सम्पर्क बाहरी दुनियां से भी है, भीतरी दुनिया से भी। भाषा के उच्चारण में जीभ का प्रमुख योग होता है। और वाणी ही बाहरी दुनिया से सम्पर्क का प्रमुख साधन है। वैसे ही भोजन चबाने और निगलने में जीभ की अहम भूमिका होती है। आहार ही शारीरिक आरोग्य, बल, वीर्य और पराक्रम का प्रमुख उपादान होता है। इस तरह जीभ ही शरीर की वह देहरी है जिसका सम्बन्ध बाहरी-भीतरी दुनिया से जुड़ा हुआ है। गोस्वामी जी कहते हैं, यदि तुम अपने बाहर-भीतर दोनों तरफ उजाला चाहते हो, तो इस जीभ-देहरी पर राम का नाम, भगवान का नाम रखो। यह नाम बाहरी-भीतरी सभी विघ्न-बाधाओं को दूर करता है।

भगवान का नाम लेने से क्या पूर्व-अर्जित पाप-बन्धन कट जाते हैं? इसके बारे में इतना ही कहना है, जैसे सूरज अस्त होने पर रात का अंधेरा चारों ओर उतर जाता है। वह पूरा अंधेरा तो सूरज निकलने पर ही दूर होता है। किन्तु दीपक से कामचलाऊ रोशनी तो मिल जाती है वैसे ही पूर्व-कर्म-कृत पाप के उदय से जब जीवन में अंधेरी रात उतर जाती है, तब यह नाम-जप का दीपक इतना उजाला तो दे ही देता है जिससे वह कठिन समय कुछ आसान बन जाए। पथरीला ऊंचा-नीचा रास्ता हो, रात का समय हो, सूरज क्या, चांद की भी रोशनी न हो, अंधेरा इतना कि हाथ को हाथ भी न सूझे, ऐसे समय में यदि किसी को यात्रा करनी पड़े, उस स्थिति में हाथ में छोटा-सा टार्च भी सफर में कितना मददगार होता है। उस टार्च की तरह होता है भगवान का नाम, जो जीवन के अंधेरे-भरे सफर में टार्च की तरह मार्ग को रोशन करता है। वह नाम चिनगारी की तरह भीतर प्रवेश कर जाए, फिर तो जन्म-जन्मों के पाप धुल ही जाते हैं।

सारांश यही है नाम-सुमिरन और मन्त्र-जप साधना का एक आसान मार्ग है। चाहे कोई बच्चा है या जवान या वृद्ध, स्त्री है या पुरूष, रोगी है या नीरोग, पढ़ा-लिखा है या अनपढ़, कमजोर है या बलवान, हर कोई व्यक्ति इसकी सरलता से साधना कर सकता है। यदि मन, वाणी और काया नाम या मन्त्र के साथ एकाकार हो जाए, तो उसमें से ज्योति प्रकट होना अनिवार्य है। इसीलिए हर धर्म-परम्परा में नाम सुमिरन और मन्त्र-जाप की इतनी महिमा गाई गई है।

जैन धर्म : इतिहास-क्रम और स्वरूप

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

गतांक से आगे-

भगवान महावीर ने जिन्हें महाव्रत कहा, भगवान बुद्ध ने उन्हें पंचशील के नाम से व्याख्यायित किया। वे ही पंच महाव्रत वैदिक धर्म में पांच यम के नाम से पुकारे जाते हैं। ईसा मसीह ने कुछ सरलीकरण के साथ उनको दस आज्ञाओं का रूप दे दिया है। इसी तरह मुस्लिम धर्म, सिख धर्म और अन्यान्य धर्मों में भी अपने अनुयायी गृहस्थ और संन्यासियों के लिए नैतिक जीवन की आचार संहिता दी गई।

अहिंसा तत्व का जहां तक सवाल है यह हर देश और हर काल में सभी शिष्ट समाज के नेताओं व धर्म प्रवर्तकों का उपदेश सूत्र रहा है। क्योंकि सामाजिक जीवन का आधार ही अहिंसा है लेकिन भगवान महावीर की अहिंसा की व्याख्या बहुत ही सूक्ष्म और गहरी है।

महावीर कहते हैं कि किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, हत्या की भावना भी हिंसा है। हिंसा का वाणी से समर्थन व शरीर से संकेत करना भी हिंसा है। जैसे स्वयं हत्या करना हिंसा है वैसे ओरों से हत्या करवाना व हत्या करने वाले का अनुमोदन करना भी हिंसा है। मारना ही नहीं किसी का दिल दुखाना भी हिंसा है। किसी के साथ धोखा या विश्वास घात करना भी हिंसा है। किसी को कटु बोलना भी हिंसा है। गाली गलोज तो हिंसा है ही। किसी की स्वतन्त्रता को छीनना भी हिंसा है। अपने हक से अधिक किसी चीज का उपभोग करना भी हिंसा है। दूसरे के हक को मारना भी हिंसा है। किसी पर अपने विचार थोपना या मनवाना भी हिंसा है। हिंसा में किसी दूसरे व्यक्ति का होना जरूरी नहीं है। हिंसा तो व्यक्ति की अपनी कलुषित मनोवृत्ति का नाम है। मन की दूषित प्रवृत्ति भी हिंसा ही है।

महावीर की हिंसा का कार्य क्षेत्र भी बड़ा व्यापक है। महावीर की हिंसा चलते-फिरते पशु-पक्षियों व मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है वहां सूक्ष्म प्राणी जगत की हिंसा को भी परिहार्य माना है। महावीर कहते हैं एक मनुष्य में जैसे आत्मा है, वैसे पेड़-पौधों में भी आत्मा है। पानी अग्नि, हवा और पृथ्वी में भी आत्मा है। चाहे उन सूक्ष्म जीवों में अपने सुख-दुःख की अभिव्यक्ति की क्षमता नहीं के बराबर है लेकिन पीड़ा तो होती ही है। इन्द्रियों व ज्ञान के

स्तर पर उनका विकास चाहे कम हुआ है। लेकिन सम्वेदनात्मक संज्ञा तो उनकी भी उतनी ही प्रबल है जितनी मनुष्य की। अतः उनको कष्ट पहुंचाना भी हिंसा है।

कोई भी शरीर धारी प्राणी शारीरिक हिंसा से सर्वथा नहीं बच सकता फिर भी अनिवार्य हिंसा को भी हिंसा ही कहा जाएगा, अहिंसा नहीं। हिंसा न छोड़ सकने की स्थिति में हिंसा को हिंसा समझना सम्यग् ज्ञान है।

भगवान महावीर ने सम्यग् ज्ञान यानी जीवन और जगत का यथार्थ बोध, सम्यग् दर्शन यानी यथार्थ श्रद्धा, सम्यग् चारित्र यानी यथार्थ आचरण तीनों को समान रूप से मोक्ष मार्ग का अंग माना है तीनों समन्वित रूप से जहां शीघ्र ही व्यक्ति को अपने लक्ष्य तक पहुंचा देते हैं। वहां एक-एक की आराधना भी आंशिक परिणाम तो लाती ही है। सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र की लौकिक और प्रारंभिक पहचान देव, गुरू, धर्म की रत्नत्रयी से होती है। देव, गुरू, धर्म की व्याख्या में भगवान महावीर का दृष्टि कोण सर्वथा निर्वैयक्तिक और गुण परक रहा है।

देव, गुरू, धर्म को परिभाषित करते हुए कहा गया :

अरहन्तो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरूणो,
जिण पण्णत्तं तत्तं इइ समत्तं मए गहीयं ।। आवश्यक सूत्र

- देव - वीतरागता को उपलब्ध, आत्म धर्म मार्ग के प्रवर्तक।
- गुरु - ज्ञान देने वाले, अज्ञान का नाश करने वाले, वीतराग पथ के मार्ग-दर्शक।
- धर्म - वह मार्ग जिस पर चलने से वीतराग स्वरूप की प्राप्ति होती हो।

ये तीनों चीजें धर्म की आधार शिला हैं। लेकिन जो गड़बड़ी होती है वह इन्हीं में होती है। जहां अपने-अपने प्रवर्तक, धर्म संचालक और मान्यता को ही असली देव, गुरु, धर्म माना जाता है, वहां सचाई कम और आग्रह व अन्धानुकरण ज्यादा होता है।

भगवान महावीर ने कभी नहीं कहा कि तुम्हारे देव ऋषभ या महावीर हैं। अर्हत् दर्शन में व्यक्ति पूजा को स्थान ही नहीं है। वहां अरिहन्त (वीतराग) प्रभु को ही देव बताया गया है। वह वीतराग आत्मा किसी नाम से पुकारी जाए, किसी वेश, किसी देश, और किसी काल में पैदा हुई हो और चाहे किसी सम्प्रदाय विशेष से जुड़ी हुई हो, वही सबका धर्म देव है। धर्म देव का आश्रय व्यक्ति आत्म विकास के लिए लेता है तो विकसित आत्मा ही उसका आराध्य हो सकती है। वैसे शरीर परिवार और व्यापार के कुशल मंगल के लिए लौकिक देवों की भी आराधना की जाती है। जिसकी कामना जहां पूर्ण होती है। वही उसका लौकिक देव बन जाता है।

गुरू भी दो तरह के होते हैं लौकिक गुरू और लोकोत्तर गुरू। लोक व्यवहार की शिक्षा देने वाले माता-पिता, अध्यापक आदि सभी लौकिक गुरू हैं। लोकोत्तर गुरू जो अपने

साधनाशील जीवन से लोगों का आध्यात्मिक मार्ग-दर्शन करते हैं। लोगों को आत्म-विकास का गुर सिखाते हैं। फिर चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय में दीक्षित हैं। किसी भी जाति के हैं। किसी भी तरह की वेशभूषा में हैं। जीवन साधना रत होना चाहिए। क्योंकि सच्चा संत ही आध्यात्मिक गुरू होता है।

भगवान महावीर से पूछा गया कि सच्चा संत कौन? आपने कभी नहीं कहा कि मेरे पंथ में दीक्षित वह सच्चा संत, और सारे असंत। उन्होंने कहा- जिसमें साधक के गुण हैं वह साधु और जिसमें साधु का स्वभाव नहीं है वह साधु का वाना पहन कर भी साधु नहीं है। जो पग-पग पर जागृत है, सावधान है, वह साधु और जो प्रमाद का जीवन जीता है, वह असाधु।

देव और गुरू की भांति धर्म स्वीकार करने की वस्तु नहीं है। वह आत्मगत है, आत्मा का स्वभाव है। लेकिन उस आत्मगत स्वरूप को प्रकट करने के लिए जो तरीका अपनाया जाता है, उसको भी कारण कार्योपचार से धर्म कह दिया जाता है। इस दृष्टि से धर्म उस रास्ते का नाम है जिस पर चलकर आत्म स्वरूप को पाया जा सके, आत्मा का विकास हो सके, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि विकारों पर काबू पाया जा सके। इसके लिए कौन सा रास्ता व कौन सी प्रक्रिया समुचित होगी, इस विषय में महावीर का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक है। वे कहते हैं। आत्म-कल्याण का वही रास्ता समुचित है जो परम ज्ञानियों ने ज्ञान से जानकर, अपने जीवन में अनुभव कर हमें बताया है। उन रास्तों को बांटना, तेरे मेरे के घेरे में बांधना, अपने-अपने नाम का सिक्का लगाना यह बिल्कुल गलत है। धर्म कभी नया-पुराना, अच्छा-बुरा, तेरा-मेरा होता ही नहीं है और न ही कभी वह नामों, विशेषणों में बन्ध पाता है। धर्म सबका एक है, शाश्वत और सनातन है। उसको प्रसारित करने वाले मजहब अपने महज स्वार्थों के कारण अलग-अलग नाम, अलग-अलग पहचान रख देते हैं। फिर धर्म एक व्यापार बन जाता है। अपनी-अपनी दुकान के माल को ऊंचा व अच्छा बताने की होड़ लग जाती है और उसमें फिर एक दूसरे पर कीचड़ उछालने की गन्दी राजनीति पनप जाती है। यह सब धर्म नहीं धर्म के नाम पर फिरका परस्ती का नाटक है।

आत्मा का धर्म सबका एक है। क्योंकि आत्मा का स्वरूप एक ही है। चाहे चीन्टी की आत्मा है, चाहे हाथी की आत्मा है और चाहे मनुष्य की आत्मा है। आत्मा में जो क्रोध, मान, माया, लोभरूप विकार हैं, उन्हें दूर करके आत्मा को सत्-चित् आनन्द स्वरूप तक पहुंचने की प्रक्रिया का नाम धर्म है। वह धर्म दान-पुण्य से भी हो सकता है। वह धर्म तप त्याग से भी हो सकता है और स्वाध्याय, ध्यान और समता से भी, अगर ईमानदारी पूर्वक किया जाए तो। ये सब धर्म के रास्ते हैं। जिन पर चलकर मोह माया में फंसा आदमी आत्म स्वरूप को प्राप्त कर सकता है।

लौकिक धर्म का जहां तक सवाल है, कुछ धर्म सबके समान हैं तो कुछ भिन्न-भिन्न भी हैं। मां-बाप की सेवा करना। दीन-दुःखी का सहयोग करना वह हर आदमी का कर्तव्य है फिर चाहे वह किसी देश में जन्मा है। किसी युग में पैदा हुआ है। किसी जाति में उत्पन्न है लेकिन कुछ लोग धर्म देश, काल, समाज, परिस्थितिवश भिन्न-भिन्न भी होते हैं। लौकिक धर्म संदर्भों के साथ बदलते भी रहते हैं लेकिन आत्मा का धर्म सदा शाश्वत है।

भगवान महावीर ने केवल दर्शन जगत की गुत्थियों को ही नहीं सुलझाया, लौकिक उलझनों का भी बड़ा सुन्दर समाधान दिया। आचार पक्ष में अहिंसा, विचार पक्ष में अनेकान्त और व्यवहार पक्ष में अपरिग्रह का सिद्धान्त भगवान महावीर ने मानव जाति का बड़ा उपकार किया है।

समाज में अहिंसा के विकास के साथ ही विश्व युद्ध की संभावनाएं और शस्त्रों की प्रतिस्पर्धाएं खत्म हो जाती हैं, समाजों और परिवारों में कलह और वैमनस्य की समाप्ति होकर प्रेम, सौहार्द और शांति का वातावरण बन जाता है।

अनेकान्त दर्शन- तत्व विवेचना और लोक व्यवहार दोनों में उपयोगी है। एक ओर अन्यान्य दर्शनों ने एकान्त आग्रह के कारण जहां सत्य का एक-एक कोण पकड़ा वहां भगवान महावीर ने अनेकान्त और अनाग्रह के माध्यम से सत्य को समग्रतया ग्रहण किया। महावीर से पूछा गया कि अभी 363 मतवाद (सम्प्रदाय) प्रचलित हैं उनमें सही कौन और गलत कौन? महावीर ने कहा- जो दर्शन अपनी मान्यता के साथ भी लगाकर चलते हैं, वे सारे सही और जो ही लगाकर चलते हैं वे सारे गलत। यानी आप जो कुछ कहते हैं वह भी सत्य है यहां तक तो ठीक है लेकिन आप जो कहते हैं वह ही सत्य है। यह आग्रह ही असत्य है। सत्य असीम और विराट होता है उसको एक व्यक्ति अपनी भाषा या मान्यता में बांध ही नहीं सकता। हर दृष्टि के पीछे कोई न कोई अपेक्षा जुड़ी रहती है। अनेकान्त दर्शन को समझने के लिए भगवान महावीर ने एक त्रिपदी का निरूपण किया- उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य। संसार में जितने भी तत्व हैं उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यात्मक हैं यानी हर पदार्थ प्रति क्षण पैदा होता है। प्रतिक्षण विनष्ट होता है और साथ में शाश्वत भी रहता है। जो पैदा होता है, नष्ट होता है वह शाश्वत कैसे? हर पदार्थ का क्षण-क्षण नया रूप पैदा होता है, पुराना नष्ट होता है और उत्पत्ति तथा विनाश के बीच भी एक ऐसा तत्व है जो शाश्वत रहता है। जैसे एक बच्चा जवान हो गया तो जवानी उत्पन्न हुई, बचपन नष्ट हो गया लेकिन उसका मनुष्यत्व ज्यों का त्यों कायम है। बच्चा था जब भी मनुष्य था, जवान रहा तो भी मनुष्य रहा यह मनुष्यत्व स्थाई है। दूध का दही बनाया। दूध खत्म हुआ, दही पैदा हुआ, लेकिन गोरस स्थायी है। वस्तु का विवेचन सापेक्ष होता है। आम खट्टा भी होता है लेकिन नीम्बू की अपेक्षा मीठा होता है। आम की खटास भी सत्य है और मिठास भी। लेकिन एक ही

वस्तु के भिन्न-भिन्न प्रतिपादन में अपेक्षा बदल जाती है। एक आदमी बाप भी है और बेटा भी। एक ही वस्तु में अनेक विरोधी धर्मों का समावेश होता है। उनको अपेक्षा भेद से बताने का तरीका स्याद्वाद या अनेकान्त वाद ही है। अनेकान्त केवल धार्मिक कट्टरता और साम्प्रदायिक विचारों का ही हल नहीं है, परिवार, समाज और पार्टियों के बीच जो अपनी-अपनी बात के आग्रह से तनाव व वैमनस्य पैदा होते हैं वे भी इससे निर्मल हो जाते हैं।

अनेकान्त को भाषात्मक रूप देने के लिए त्रिभंगी और सप्त भंगी का रूप दिया गया। जिसे ठीक ढंग से न समझा जाए तो आदमी उसमें उलझ भी जाता है। सप्तभंगी त्रिभंगी का ही विस्तृत रूप है। यानी एक ही वस्तु में किसी अपेक्षा से अस्तित्व का निरूपण, किसी अपेक्षा से नास्तित्व का निरूपण और समग्र धर्मों को एक साथ न कह सकने की अपेक्षा से अव्यक्त धर्म का निरूपण। हर वस्तु अनन्त धर्मात्मक है। उसमें एक साथ अनन्त विरोधी धर्म युगल रहते हैं। अलग-अलग धर्म प्रतिपादन के समय अपेक्षा बदल जाती है। अस्तिधर्म किसी दूसरे दृष्टि बिन्दु से है। नास्तिधर्म किसी और दृष्टि कोण से और शेष जो एक साथ वाणी का विषय नहीं बन सकते उनकी अपेक्षा से अव्यक्त। विचारों का अनाग्रह सत्य की सबसे बड़ी शर्त है और आज के युग की सबसे बड़ी अपेक्षा। अनेकान्त दर्शन भगवान महावीर की या जैन धर्म की विश्व को मौलिक देन है।

अपरिग्रह सिद्धान्त के दो पक्ष हैं। आध्यात्मिक पक्ष और धार्मिक पक्ष। अध्यात्म जगत में अपरिग्रह का अर्थ अनासक्ति है। किसी भी वस्तु का अनासक्त भाव से उपभोग करना अपरिग्रह है। श्रीकृष्ण का अनासक्ति योग, राजर्षि भरत का मूर्छा विहीन योग, अपरिग्रह के ही उदाहरण हैं। लेकिन अनासक्त भाव एक बहुत ऊंची भूमिका है और उस तक एक अध्यात्म योगी ही पहुंच सकता है। अतः सामाव्य गृहस्थों के लिए भगवान महावीर ने परिग्रह के स्वल्पीकरण व सीमा निर्धारण तथा इच्छा विरोध की बात कही। बर्हिमुखी व्यक्ति भौतिक वस्तुओं की प्रचुरता में ही अपनी सुरक्षा, शानशौकत, सम्मान समझता है। अतः वह उनको पाने के लिए जायज नाजायज सभी तरीके अपनाता है। धन वैभव को त्राण शरण समझने वाले व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य अर्थोपार्जन ही रह जाता है। मानवीय मूल्य सारे विघटित हो जाते हैं। फिर वह पैसे के लिए किसी की भी हत्या कर सकता है। किसी का भी शोषण कर सकता है। किसी से भी विश्वास घात कर सकता है। इसी अर्थ लिप्सा की मनोवृत्ति ने समाज में विषमता, शोषण, उत्पीड़न, नृशंसता, पनपाई है। पूंजीपति और सर्वहारा यह वर्ग विभेद यहीं से खड़ा होता है। भगवान महावीर के समाजवाद, साम्यवाद या सर्वोदय में मनुष्य-मनुष्य की समानता ही नहीं, प्राणी मात्र के प्रति समता अभिमत है। भगवान महावीर की वस्तु वितरण व्यवस्था बड़ी विलक्षण है। वे हर व्यक्ति को अनावश्यक संग्रह का नियम करवाते हैं और आवश्यकताओं का भी अल्पीकरण करवाते हैं। जब एक व्यक्ति की

आवश्कता सीमित हो जाएगी और उससे अधिक वह नहीं रखेगा तो अवशेष द्रव्य अपने आप औरों तक पहुंच जाएगा। विश्व शांति और संघर्ष शमन के लिए जरूरी है जीवन संचालन की आवश्यक सुख सामग्री सबको समान रूप से मिले। जैसे सूरज की रोशनी, हवा और पानी प्रकृति सब को एक रूप से बांटती है। तो इस प्रसंग को लेकर कोई संघर्ष, कोलाहल, छीना झपटी, हेराफेरी नहीं है। यही स्थिति जब पृथ्वी पर पैदा होने वाली अन्य साधन सामग्री की होगी तब स्वतः ही स्वर्ग उतर आएगा धरती पर, लेकिन इस व्यवस्था को सत्ता शक्ति से नहीं लाया जा सकता। हृदय परिवर्तन के माध्यम से भगवान महावीर के अपरिग्रह सिद्धान्त को जीवन में उतारा जाए तो समाजवाद और साम्यवाद लाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

भगवान महावीर का दृष्टिकोण हर जगह व्यापक निवैयक्तिक रहा है। उन्होंने वीतरागता की आराधना के लिए, मन की शुद्धि के लिए मंत्र भी दिया तो बिलकुल विराट नवकार महामंत्र-

णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

शरण भी बताई तो अपनी या अपने धर्म की नहीं अरिहन्त, सिद्ध, साधु और शुद्ध धर्म की शरण लेने का उपदेश दिया।

भगवान महावीर ने जीवन और जगत का बोध कराते हुए नव तत्वों और छह द्रव्यों का विश्लेषण क्रिया जिनको जानकर संसारी आत्माएं अपने बन्धनों का विनाश करती हैं।

नव तत्व :-

(1) जीव - चेतन द्रव्य
(2) अजीव - अचेतन द्रव्य
(3) पुण्य - सत्प्रवृत्ति का सुफल
(4) पाप - असत्प्रवृत्ति का अशुभ फल
(5) बन्ध - आत्मा के शुभ-अशुभ कर्म का बंधन
(6) आश्रव - आत्मा की शुभ-अशुभ प्रवृत्ति
(7) संवर - आत्मा का प्रवृत्ति का संबरण
(8) निर्जरा - आत्मा पर चिपके कर्मों का निर्जरण
(9) मोक्ष - आत्मा का समस्त बंधनों से मुक्त होना

छह द्रव्य :-

(1) धर्मास्तिकाय - वस्तु की गतिशीलता में सहायक तत्व।
(2) अधर्मास्तिकाय - वस्तु के स्थिर रहने में सहायक तत्व।
(3) आकाशास्ति काय - जीव जगत को आश्रय देने में सहायक तत्व।

(4) काल - जीव जगत को नूतन पुरातन करने वाला तत्व।
(5) पुद् गलास्तिकाय - सारा दृश्यमान जड़ जगत।
(6) जीव - प्राण धारी संचरणशील चेतना।

भगवान महावीर ने जीव जगत का बोध करने वाले ज्ञान समूह का भी विवेचन दिया। उन्होंने पांच ज्ञानों का उल्लेख किया है-

(1) मतिज्ञान - कान, आंख, नाक, मुख, त्वचा आदि इंद्रियों और मन के मनन से जो ज्ञान होता है उसे मतिज्ञान कहा जाता है।

(2) श्रुतज्ञान - ज्ञान सम्पन्न आत्माओं के शब्दों से व अनुभव प्रवण व्यक्तियों के कथन से जो ज्ञान होता है वह श्रुतज्ञान है।

(3) अवधिज्ञान - जो साक्षात आत्मा से आंख मूंदकर भी समीप दूर की दृश्यवस्तु का बोध होता है उस ज्ञान को अवधिज्ञान कहते हैं।

(4) मनः पर्यवज्ञान - किसी के मन में उत्पन्न होने वाले विचारों को जानने वाले ज्ञान को मनः पर्यवज्ञान कहा जाता है।

(5) केवलज्ञान - जो मूर्त अमूर्त सभी तरह के पदार्थों को जानने वाला आत्मा का शुद्ध ज्योर्तिमय स्वरूप है, उसे केवल ज्ञान कहा जाता है।

भगवान महावीर के अनुसार प्राणी अपने अल्प विकसित, अर्थ विकसित, चरम विकसित ज्ञान के द्वारा जीव जगत के प्रपंच को जानकर हेय को छोड़ता हुआ, उपादेय को ग्रहण करता हुआ, ज्ञेय के प्रति तटस्थ रहता हुआ अपने अनन्त जन्मों के कर्मों को नाश कर परमात्म पद को प्राप्त कर सकता है। जैन दर्शन का भक्त, भक्त ही नहीं रहता भगवान के साथ तादात्मय स्थापित कर एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है।

कतिपय लोगों की यह धारणा है कि जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है। वह परमात्मा को नहीं मानता। लेकिन जैन दर्शन का सारा पराक्रम ही परमात्म पद की प्राप्ति के लिए होता है। वह स्वर्ग नरक, आत्मा, परमात्मा सब कुछ मानता है लेकिन परमात्मा को सृष्टि का कर्ता-धर्ता नहीं मानता। उसका मानना है कि यह उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यात्मक जगत् शाश्वत है। अनादि अनन्त है सृष्टि प्रलय आदि की प्रक्रिया तो इसका रूपान्तरण है।

अस्तित्व की दृष्टि से यह अनादि है। रूप परिवर्तन की दृष्टि से बदलता रहता है। एक लकड़ी जली, राख हो गई। राख मिट्टी बनी। मिट्टी का घड़ा बना। लकड़ी के रूप बदल गए, वस्तु का अस्तित्व तो कायम ही है। इसी तरह यह संसार हैं। इसमें समस्त प्राणी अपने-अपने कर्मों का फल भोगते हुए अच्छे बुरे स्थानों में जाते हैं। लेकिन उसमें ईश्वर का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। जैन दर्शन का ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और वीतराग होता है, उसकी निगाह में सारे प्राणी एक समान हैं फिर वह परमात्मा पिता किसी को सुख, किसी

को दुख, किसी को पंडित्य, किसी को मूर्खता, किसी को सम्पन्नता, किसी को विपन्नता, किसी को प्रभु सत्ता, किसी को दासता, किसी को परिपूर्ण स्वास्थ्य, किसी को निरंतर की बीमारी क्यों देगा? अगर इसमें यह तर्क दिया जाये कि जैसे कर्म हैं वैसा ही फल ईश्वर उसको देता है। तो फिर ईश्वर को बीच में लाने की जरूरत ही क्या है। जो प्राणी जैसा कर्म करता है उसका अच्छा बुरा फल उसे मिलेगा ही। कोई आदमी अग्नि में हाथ डालेगा तो वह जलेगा ही। दूसरे को जलाने की जरूरत ही क्या पड़ती है? कुल मिलाकर जैन धर्म ईश्वर की परम सत्ता को स्वीकार करके भी उसे सृष्टि का कर्ता, धर्ता, संहर्ता नहीं मानता। यों हर आत्मा परमात्मा है और वही अपने सुख-दुख की कर्ता है भगवान महावीर से पूछा गया- 'दुक्खे केण कड़े' दुःख किसका पैदा किया हुआ है। अज्ञान और प्रमादवश प्राणी ऐसे कर्म कर लेता है जिससे उसको दुख मिलता है। इसीलिए महावीर ने सबसे अधिक बल मन शुद्धि, वाणी संयम, काया संयम पर दिया है। यही वह उपाय है आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण, इन्सान से भगवान बनने का। हर आत्मा में परमात्मा की सत्ता है अगर कोई उस सत्ता को अनावृत कर सके।

वर्तमान में जैन धर्म कई सम्प्रदायों में बिखरा हुआ है लेकिन मूलभूत आधार और स्वरूप में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दिगम्बर, श्वेताम्बर, मंदिरपंथी, स्थानकवासी, तेरापंथी, आदि सभी सम्प्रदायों का आधार वही महावीर वाणी है। सिद्धांत सबका एक हैं। बिखराव है अपने-अपने अहंकार, अपनी-अपनी विचार धारा और अपने-अपने आग्रह का। आग्रह में सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़ लिया जाता है और उसी तोड़-मरोड़ का परिणाम है ये अलग-अलग सम्प्रदाय। पर महावीर दर्शन से कोई भी इधर-उधर नहीं जा सकता। ऊपर की परंपराओं में सभी ने अपनी पहचान के लिए अपने ढंग का परिवर्तन कर लिया है। भगवान महावीर के शुद्ध दर्शन को समझने के लिए किसी एक सम्प्रदाय से परिचित होने से काम नहीं चलेगा। सभी सम्प्रदायों का समन्वित रूप महावीर का दर्शन है।

भगवान महावीर को हुए आज ढाई हजार वर्ष से भी अधिक समय हो गया इस बीच अनेक उतार-चढ़ावों व शाखा उपशाखाओं से गुजरता हुआ जैन धर्म आज हिन्दुस्तान के कोने-कोने में फैला हुआ है। विदेशों में भी जैन धर्म के अनुयायी बसते हैं। फिर भी लाखों श्रावक और हजारों साधु-साध्वियों तक ही सीमित है लेकिन इस धर्म का व धर्म के अनुयायी आचार्यों, संतों व श्रावकों का वर्चस्व पूरे देश व समाज पर छाया हुआ है। आज भी जैन धर्म व जैन मुनियों के प्रति लोगों के मनों में बड़े आदर व श्रद्धा के भाव हैं। तथा अन्यान्य साधु समाजों की अपेक्षा जैन मुनि को बड़ी इज्जत की दृष्टि से देखा जाता है। यह सब जैन धर्म की संयम व विवेकपूर्ण विचार धारा और आचार संहिता का ही सुपरिणाम है।

कैसे मिले कमर दर्द से छुटकारा

कमर दर्द महिलाओं को अक्सर होने वाली समस्या है। ज्यादा देर तक बैठे-बैठे कार्य करना, खड़े रहना, बैठना या कार्य करने का गलत ढंग, नरम गद्दों पर सोने, एकाएक गलत तरीके से भारी वजन उठा लेने इत्यादि विभिन्न कारणों से कमर दर्द हो सकता है। कमर दर्द से बचने के लिए कुछ विशेष नियम इस प्रकार है :-

• कमर दर्द में मेथी की सब्जी खाएं।

• गेहूं की रोटी एक ओर से सेक लें और एक ओर से कच्ची रखें। कच्ची की ओर तिल का तेल लगाकर दर्द वाली जगह पर बांध दें।

• जायफल पानी में घिसकर तिल के तेल में मिलाकर अच्छी तरह गर्म करें। ठंडा होने पर कमर पर मालिश करें।

• एक चम्मच अदरक के रस में आधा चम्मच घी मिलाकर पीएं।

• बादाम के तेल से कमर की मालिश करने से जल्दी लाभ होता है।

• गठिया का दर्द, सिरदर्द एवं कमर दर्द में लौंग के तेल की मालिश बहुत फायदेमंद है।

• कमर दर्द होने पर एक चम्मच काला नमक सादे पानी के साथ दिन में दो बार लें।

• शरीर के किसी भी स्थान में दर्द हो तो जायफल का लेप करें।

• खसखस और मिश्री दोनों बराबर मात्रा में लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। 6 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन सुबह-शाम खाएं और ऊपर से गर्म दूध पीएं।

• कमर दर्द, घुटनों का दर्द और गठिया में हर रोज प्रातः खाली पेट तीन-चार अखरोट की गिरियों को अच्छी तरह चबाकर खाने से बहुत लाभ होता है और रक्त शुद्ध होता है। लगातार दो सप्ताह तक खाएं।

• दूध में सौंठ का चूर्ण डालकर सुबह-शाम लेने से कटिशूल मिटता है।

• अजवायन को किसी साफ वस्त्र में लेकर उसकी पोटली बनाकर तवे पर गर्म करें तथा कमर पर उसका सेंक दें।

• पानी में पिसा हुआ जीरा और शक्कर मिलाकर नियमित सेवन करने से कुछ ही दिनों में कमर का दर्द और प्रदर संबंधी रोग दूर हो जाते है।

• एक किलो सरसों के तेल में 250 ग्राम लहसुन की कली डालकर आग पर तब तक गर्म करें, जब तक कि लहसुन जल न जाए। इस तेल को छानकर शीशी में भर लें और दिन में दो बार मालिश करें।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

मासिक राशि भविष्यफल-दिसम्बर 2011

○ डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह विशेष फलदाई नहीं है। व्यय की अधिकता रहेगी। मानसिक रूप से चिंता बनी रहेगी। कोई पारिवारिक उलझन भी सामने आ सकती है, सोच समझ के कदम उठाएं। दाम्पत्य जीवन में भी परेशानी महसूस कर सहते हैं। समाज में मान, सम्मान बना रहेगा।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह आर्थिक स्थिति दुर्बल रहने की सम्भावना है। महिलाओं के लिये समय अच्छा है। उन्हें निजी कार्यो में सफलता मिलेगी। वृष राशि के जातक अपनों से ही धोखे के शिकार हो सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्य तौर से ठीक रहेगा। समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम साध य लाभ देने वाला है। अपनी वाणी पर नियंत्रण न रखने से संकट खड़ा हो सकता है। परिवार में विरोधाभास के संकेत मिलेंगे। किसी प्रकार चोट भी लग सकती है। स्वास्थ्य सुख में कमी आयेगी। किसी वस्तु के खोने का अफसोस होगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

कर्क-कर्क राशि के जातकों को इस माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अधिक दौड़ धूप के पश्चात् लाभ के अवसर मिलेंगे। भाई-बंधुओ की उन्नति होगी। कोई रूका हुआ पैसा भी मिल सकता है। किसी नये कार्य की योजना बन सकती है। पुराने चले आ रहे किसी मुकदमें से छुटकारा मिलेगा। यात्रा सफल होगी। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखना होगा।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से थोड़े लाभ वाला है। घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखें। अपने नेत्रों को चोट से बचाएं। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। स्वास्थ्य भी सामान्यतः ठीक रहेगा। गुस्से पर काबू रखें।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से सामान्य लाभ वाला है। आप अपने बुद्धि-बल के द्वारा ही लाभ अर्जित करेंगे। निर्माण कार्य करने वालों को सफलता मिलेगी। किसी नई योजना का भी क्रियान्वयन हो सकता है। दाम्पत्य जीवन सामान्यतः सुखी रहेगा। परिवार में सामन्जस्य बनाने की कोशिश करें। स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा।

तुला–तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वार्ध अच्छा है, उत्तरार्ध में आवश्यक कार्यों में तथा शुभकार्यों में रूकावट पैदा होगी। विरोधी तत्व परेशानी में डाल सकते हैं। अपनी सेहत का भी ध्यान रखें। क्षमता से बढ़ कर कोई कार्य न करें वरना स्वास्थ्य विपरीत रूप से प्रभावित हो सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य तौर से बनी रहेगी।

वृश्चिक–वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का पूर्वार्ध अच्छा है जिससे लाभ होगा, नये लोगों से मुलाकात होगी,अन्य मार्गों से भी आय होने की संभावना बनेगी, किंतु उत्तरार्ध में आवश्यक कार्य पूरे नहीं हो पायेंगे। यात्राओं से लाभ नहीं होगा। परिवार एवं पत्नी से मनमुटाव की स्थिति रहेगी। चोट लगने की संभावना है।

धनु–धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से लाभ वाला है। स्वंय कार्य करने वालों को इस लाभ से संतुष्टि भी रहेगी। किन्तु साझेदारी के कार्यो में विवाद संभव है। नौकरी पेशा जातकों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है स्वयं के तथा पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में सचेत रहें। यात्राओं को जहां तक हो सके, टालें। इन जातकों की कोई विवाह संबंध में अड़चन होगी तो समाप्त हो जाएगी।

मकर–मकर राशि के जातकों के लिये इस माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से आर्थिक स्थिति डावांडोल रहेगी। साझीदारों के साथ पूराने विवाद उठ सकते है। अपनों से भी विरोध का सामना करना पड़ सकता है। नये लोगों से जब संबंध बनाए, उनसे भी सावधान रहें। किसी भी हालत में अपनी क्षमता से ज्यादा धन किसी स्कीम में न लगाएं।

कुम्भ–कुम्भ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह आर्थिक आमदनी अनुकूल रहेगी। किन्तु व्यय की भी अधिकता होगी, जिससे चिंता बनेगी। नेत्रों को चोंट से बचाएं। शत्रु सिर उठायेंगे किन्तु पराजित होंगे। कार्यों में आगे आ रही रूकावटों पर अंकुश लगेगा। धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी। अपने तथा अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मीन–मीन राशि के जातको के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अनु कूल है किन्तु व्यापारियों के लिये सरकारी अधिकारियों की ओर से कोई मुश्किल खड़ी की जा सकती है। मानसिक चिंता बनेगी। कोई नया कार्य शरू करना कोई फायदे का सौदा नहीं है। घरेलू खर्चा भी सोच समझकर करें, कर्ज लेने की नौबत न आये। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

-इति शुभम्

मातृ-स्वरूपा साध्वीश्री मंजुश्रीजी का स्वर्गारोहण

दिनांक 9 नवम्बर, 2011 को सायं मातृ-स्वरूपा सरलमना साध्वीश्री मंजुश्रीजी का अचानक हृदय-गति रुक जाने से देह-विलय हो गया। वे लगभग 91 वर्ष के थे। आपका जन्म सरदारशहर, चुरू जिले में श्रावक-श्रेष्ठ श्री विरधीचन्दजी दसानी परिवार में हुआ। तेरह वर्ष की उम्र में दीक्षित आपका दीक्षा-पर्याय करीब 78 वर्ष का रहा। तेरापंथ के अष्टम आचार्यश्री

कालूगणि के कर-कमलों से आपकी दीक्षा हुई। करीब 21 वर्ष की वय में नवम आचार्यश्री तुलसी गणि द्वारा आप अग्रगण्य बना दी गई। आपने अपनी अनुजा साध्वी चांदकुमारीजी, भगिनी-तुल्य साध्वी दीपांजी तथा अन्य सहयोगी साध्वियों के साथ कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब तथा दिल्ली आदि प्रांतों की हजारों मीलों की पद-यात्राओं द्वारा जन-जन में धर्म-जागरण का यशस्वी कार्य किया। पिछले तीस वर्षों से मानव मंदिर मिशन के संस्थापक आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा संघप्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी के सान्निध्य में आप अपनी अनमोल सेवायें देती रही हैं।

इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने अपने श्रद्धांजलि-भाषण में कहा- आज मातृ-स्वरूपा सरलमना साध्वीश्री मंजुश्रीजी हमारे बीच नहीं रहीं। जहां तक जानकारी है पूज्य आचार्यश्री कालू-गणि द्वारा दीक्षित साध्वियों में आप तथा अपकी साध्वी बहिन चांदकुमारीजी दो ही विद्यमान थी। आज आपका भी स्वर्ग-वास हो गया है। आपने यशस्वी जीवन जिया। जिस किसी प्रदेश में आपका जाना हुआ, अच्छी धर्म-प्रभावना की। विशेष यह है इतनी वयः स्थविर होते हुए भी आप विचारों से पुराणपंथी नहीं थीं। तभी तो मानव मंदिर मिशन के प्रगतिशील विचारों को आपने आरंभ से ही पूरा सहयोग दिया। पूज्यवर ने श्रद्धांजलि स्वरूप कुछ दोहे फरमाए, वे इस प्रकार हैं-

सरलमना मातृ-स्वरूपा मंजुश्रीजी महाराज
बात-बात में चले गए, सिद्ध कर आतम-काज।
सजग तप-स्वाध्याय में, सबसे अति अनुराग
अठहत्तर वर्षों की संयम-साधना बड़ा सद्भाग।
चांदकुमारी जी दीपांजी ने की जीवन भर सेवा
पदमश्री ने भी लिया सेवा का मेवा।
दसानी परिवार ने खूब निभाया प्रेम
हिसार-सुनाम समाज का सवाया योग-क्षेम।
संथारे की भावना, गुरू से दिल का तार
हम सबकी श्रद्धांजलि, साध्वीश्री करो स्वीकार।

पूज्या संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा- आज हमारे धर्म-परिवार की सबसे बुजुर्ग साध्वीश्री के स्वर्ग-वास से एक बड़ी कमी पैदा हो गई है। आपकी संयम-साधना सुदीर्घ रही। तप, जप, स्वाध्याय में बराबर निरत रहतीं। पिछले लम्बे समय से मेरे से तथा गुरूदेव से संथारे की भावना बार-बार प्रकट करतीं। मेरे प्रति तथा गुरूदेव के प्रति अपने मन की प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहतीं- यह मेरा सौभाग्य है जो मेरी वृद्धावस्था आपके चरणों में खूब शांति-समाधि में बीत रही है। गुरूदेव तो कलियुग में भगवान के समान हैं। बड़े महाराजजी (साध्वीश्री मंजुलाश्री जी) का स्नेह-वात्सल्य अनुपम है। आप दोनों के हाथों में अंतिम सांस लूं यही मनो-कामना है। संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री ने कहा- मुख-द्वार से प्राणों का जाना दिवंगत आत्मा की ऊँची गति का सूचक है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन साध्वीश्री के अंतिम संस्कार के समय दसानी परिवार, हिसार, सुनाम, भवानीगढ़ से समागत बन्धु-जन तथा दिल्ली-समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति भाव भीनी श्रद्धांजलि।

दिवंगत सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री के प्रति अन्य श्रद्धांजलियां इस प्रकार हैं

सिन्धु के तल सम गहरी, धवल चान्दनी सी उज्जवल शीतल
तन निर्मल मन निश्छल, स्नेहिल मृदु वाणी झरती अविरल
प्रेम वात्सल्य की बहती गंगा, सिद्धान्तों पर अटल अविचल
उस पूजनीया पुण्यात्मा को, नमन हमारा हरदम प्रतिपल

-सम्पत राय दस्सानी, कलकत्ता

आसूं की बरसात हो रही, दिल का दर्द नहीं जाता
जीवन के क्षण साथ बिताये, उनका स्मरण नहीं जाता
सरल स्निग्ध भावों से भर, जो शिक्षा उनसे पाई थी
जीवन पथ के हर मोड़ पर, वही मेरे काम आई थी
मां सी ममता, बहन का प्यार, जो भी उनसे पाया मैंने
जन्म जन्मान्तर याद रहेगा, क्या कुछ नहीं पाया था मैंने
सही मार्ग दिख लाया मुझको, मैंने बस उनका इंगित देखा
बचा जीवन निर्लिप्त रहूं, बनी रहे यह जीवन रेखा
क्या भूलूं क्या याद करूं, यह तो कड़वी सच्चाई है
पंछी तो उड़ गया पिंजरे से, अपने हाथ तो यादें आई है

-साध्वी चान्द कुमारी

सुरत थी प्यारी, जग से न्यारी,
ज्ञान ध्यान वात्सल्य, सब तुम्ही में खिला था।
दुनिया में मूरत तो बहुत हैं,
मगर एक मां मंजु श्री जैसी कहां है।
जिसे पाया, वात्सल्य प्रेम एवम् मधुर वाणी से अपना बनाया।
चिर आयु मां बहन बनकर अथाह स्नेह बरसाया।
हे मोक्ष गामी मां हम पर पूरी कृपा दृष्टि बनाये रखना।
हम हैं आपके सदैव अपना बनाये रखना।

परम पूजनीय मंजु श्री जी महाराज तप, त्याग, संयम एवम् वात्सलय की साक्षात मूरत थी, जिनका ज्ञान, चरित्र एवम् अनुभव स्वयं ही एक ग्रंथ का रूप रहा है। आपकी वाणी की मिठास, वात्सल्य प्रेम व हृदय की सरलता बेमिसाल थी। आप सदैव मधुर वाणी व हंसमुख चेहरे की धनी रही हैं। ऐसी महान आत्म साधिका महाराज श्री को शत-शत नमन करते हुए, हम सब हिसार वासी अपनी विनम्र विनयांजली अर्पित करते हुए, जिनेन्द्र भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि हम सदैव महाराज श्री द्वारा दिखाये गये धर्मज्ञान के मार्ग पर चलते रहे और आप सदैव मोक्षगामी बने रह कर हम सब पर चन्द्रमा की भांति शीतलता प्रदान करते रहें।

-एस.पी. जैन, एडवोकेट, हिसार

वो अंहिसा, त्याग और करुणा की सुलभ तस्वीर थी
साधको की हर समस्या के लिए गम्भीर थी
रूपचन्द्र जी महाराज के सानिध्य का था वो असर
रात दिन कर साधना वो बन गई महावीर थी

महान साध्वी का महान प्रयाण महान साध्वी मंजूश्री जी आज हमारे बीच नहीं रही। उनके महाप्रयाण की जैसे ही सूचना मिली स्तब्ध रह गए। वो आयुवृद्ध थी। लेकिन हम उन्हें खोना नहीं चाहते थे। उनके दर्शन मात्र से ही धन्य समझते थे। हिसार में अनेको अनेक बार साध्वी जी के दर्शन व विचारों से सरोबार हुए और अपने आपको सौभाग्य शाली समझा। जीवन के प्रति उनका आशावादी दृष्टिकोण स्पष्ट था। साध्वीश्री जी अपनी आत्मा में स्थिर व वात्सल्य की साक्षात मूर्ति थी। उनकी असीम मंगल कामनाएं उनकी प्रेरणाएं उनके आदर्श सदैव ही हमारे मार्ग को प्रशस्त करते रहेगें। महान चरितात्मा के सिद्धान्त व बताए मार्ग पर चलकर हम जीवन धन्य करे यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-शकुन्तला राजलीवाल, हिसार

दिवंगत सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री महाराज हमारी संसार पक्षीय मासी सासुजी थी, अतः निकटतम होना स्वभाविक था। जब-जब हमने हिसार, सुनाम, धुरी, दिल्ली में दर्शन-सेवा की, तब-तब हमें स्नेह व वात्सल्य से ओत-प्रोत कर देती थी। खुले दिल से प्रेम बांटने और धर्म-प्रेम की डोरी से समाज को बोधने वाली सरलमना श्री मंजुश्री महाराज को गुरूदेव श्री रूपचन्द्रजी महाराज मां के रूप में देखते थे। यह गुरूदेव की असीम कृपा थी। संघ प्रमुखा श्री मंजुलाश्री महाराज दिन में बराबर सम्भालती रहती थी। संघ की हर साध्वियां उनकी सेवा के लिए तत्पर रहती थी।

धर्म-प्रभावना जिन-जिन क्षेत्रों में की, वहीं के लोग उन्हें याद करते रहते हैं। इससे संघ भी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती थी। वयोवृद्ध होते हुए महासतीश्री चान्द कंवर जी व दीपांजी आदि की सेवा तो एक अनुकरणीय उदाहरण है। साध्वीश्री मंजुश्री जी की आत्मा ऊर्ध्व-गमन करती हुई अध्यात्म के उच्चतम शिखर पर पहुंचे, यही हमारी अन्तरात्मा की मंगल-भावना है।

-जतनलाल इलायची, लुनिया विशाखापटनम, (आंन्ध्र प्रदेश)

मानव मंदिर मिशन का 30वाँ वार्षिक समारोह

रविवार दिनांक 11 दिसम्बर, 2011

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज के सान्निध्य में मानव मंदिर मिशन का 30वाँ वार्षिक समारोह रविवार, प्रातः 10 बजे, 11 दिसम्बर 2011 को जैन आश्रम, मानव मंदिर केन्द्र नई दिल्ली में रहेगा।

इस अवसर पर मंगल-प्रवचनों के साथ-साथ पूज्य गुरूदेव की दिव्य वाणी में **ऊँ आत्मा का नाद तथा मंगलाचरण की** CD का लोकार्पण भी होगा। गुरूकुल के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम विशेष आकर्षण के केन्द्र होंगे। रूपरेखा पत्रिका द्वारा आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

श्रीमती पूसीदेवी सिंघी का स्वर्ग-वास

स्वर्गीय श्री शुभकरणजी सिंघी की धर्म-पत्नी श्रीमती पूसी देवी सिंघी का देहावसान कार्तिक पूर्णिमा, प्रातः विराट्नगर नेपाल में संधारापूर्वक हो गया। वे 84 वर्ष के थीं। विशेष यह है कि वे पूज्य गुरूदेव तथा साध्वी सुभद्राजी (बाई महाराज) की संसारपक्षीय भाभीजी थी। पिछले कुछ वर्षों से शरीरिक कमजोरी के कारण उनका फिरना-चिलना नहीं के बराबर था। उनके सुपुत्र सुपारस सिंघी तथा पुत्र-वधू श्रीमती कनक सिंघी की सराहनीय सेवाएं औरों के लिए भी एक प्रेरणा है। अंतिम समय में उनके आत्म-परिणाम बहुत ऊँचे रहे। पारस प्रभु तथा भिक्षु स्वामी का सुमरन करते हुए संथारा भी लिया। आचार्यश्री रूपचन्द्रजी, प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी आदि ने दिवंगत आत्मा की शांति, सद्गति एवं बन्धन-मुक्ति की मंगल कामना की।

दिवंगत आत्मा के प्रति मानव मंदिर मिशन तथा रूपरेखा परिवार की भाव भीनी श्रद्धांजलि।

-संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी अपने श्रद्धा-सिक्त उद्‌गार प्रकट करती हुई।

-विशाल जन-समुदाय साध्वीश्री का अंतिम दर्शन करता हुआ।

-पूज्य गुरूदेव साध्वीश्री की स्मृति में दोहे फरमाते हुए।

-अंतिम शोभा-यात्रा में उमड़ी भीड़ की एक झलक।